शासकीय गजानंद अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भाटापारा

पर्यावरण परियोजना कार्य हेतु परीक्षार्थियों के लिए दिशा निर्देश

सत्र 2020–21

प्रिय विद्यार्थियों जैसा कि आप सबको विदित है कि छत्तीसढ़ में भांठा ऐसी भूमि को कहा जाता है जिसमें नमी की कमी एवं मोटे कणों से युक्त मिट्टी होती है। हमारा भाटापारा क्षेत्र भी ऐसी ही भूमि से आच्छादित है। अतः स्वाभाविक रूप से हमारी भूमि में नमी की कमी हमेशा रहती है। जिसका सीधा असर हमारे भू–जल स्तर पर पड़ता है। वर्तमान समय में भाटापारा क्षेत्र में भू–जल स्तर में लगातार गिरावट दर्ज की गई है। पहले बोरवेल की अधिकतम गहराई 100 फीट तक हुआ करती थी जिसमें किसी परिवार को वर्ष भर के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध हो जाता था। लेकिन वर्तमान में 300 फीट की गहराई पर भी पर्याप्त भू–जल उपलब्ध नहीं हो पा रहा है।

भू–जल स्तर के गिरावट के प्रत्यक्ष कारणो में प्लास्टिक एवं पॉलीथीन का बढ़ता उपयोग एवं शहरों एवं गांवो में बढ़ता कांक्रीटीकरण है। भाटापारा क्षेत्र में प्रतिवर्ष औसत वर्षा 100–120 से.मी. होती है। यदि हमारे घर का छत 1000 वर्गफीट का है तो इस छत में वर्षा के रूप में 1,00,000 लीटर जल प्राप्त होता है जो कि एक परिवार के वर्षभर के घरेलु उपयोग हेतु पर्याप्त है। लेकिन संरक्षण के अभाव में यह जल कांक्रीट की छत से कांक्रीट की गलियों और नालियों में बहकर सीधे नदियों के माध्यम से समुद्र में पहुंच जाता है और इस प्रकार जो वर्षा का जल हमारे घरों के आसपास भूमि द्वारा सोख लिया जाता था वह व्यर्थ ही बह जाता है।

अब समय आ गया है जब हम केवल संगोष्ठियों में चर्चा, पोस्टर या नारा लेखन तक ही सीमित न रहें। अभी समय है जमीनी स्तर पर कार्य करने का। अतः शासकीय गजानंद अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय भाटापारा अपने छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने तथा उसका संरक्षण एवं संवर्धन करने हेतु प्रेरित करने के लिए प्रतिबध्द है। भू–जल संरक्षण एवं संवर्धन इसका एक भाग है।

महाविद्यालय द्वारा पर्यावरण अध्ययन विषय के अंतर्गत सत्र 2020–21 में यह परियोजना कार्य **''वर्षा जल संरक्षण''** अपने विद्यार्थियों को सौंपा जा रहा है। इस आशा के साथ कि इससे महाविद्यालय परिवार एवं भाटापारा क्षेत्र लाभान्वित होगा।

पर्यावरण अध्ययन प्रोजेक्ट फाईल निर्माण एवं जमा करने हेतु निर्देश

1. दिये गये लिंक के अनुसार छात्र–छात्राओ द्वारा बनाये गये विडियों का अवलोकन करें। जो महाविद्यालय के वेबसाईट में विडियों गैलरी में उपलब्ध है।
2. सोखता निर्माण के समय लिये गये फोटोग्राफ को ईमेल– evsgna@gmail.com पर भेजे।
3. सोखता निर्माण के समय लिये गये फोटोग्राफ सहित 5 पेज का परियोजना रिपोर्ट तैयार कर मुख्य परीक्षा के उत्तर पुस्तिकाओं के साथ लिफाफे में संलग्न कर महाविद्यालय में जमा करें।
4. फोटोग्राफ लेने हेतु जियो टेग ऐप का प्रयोग करें।